APPENDIX

APPENDIX –I

TOOLS

SEMI-STRUCTURE INTERVIEW OF STUDENTS

1. Do you like learning Hindi? If ` yes" why do you like it or if your answer is `No" tell why?

2. Which language do you speak at home?

3. Which among the languages you study in school, do you like the most? Why?

4. Are your parent"s transferable job?

5. How often have you changed school?

6. What difficulties do you face after changing school?

7. Do you understand everything your teacher teaches in class? If you don"t understand what you do?

8. In what way would you like the teacher to teach you in class?

QUESTION READING OR WRITING

9. Are there Hindi books in your library? Do you issue them and read them? If `Yes" give 1or 2

Names of books you have to read last month.

10. Do you read Hindi magazine or Hindi newspaper? Which ones?

11. What problems do you face while reading Hindi?

12. Do you like reading prose or poetry?

13. Do you pronounce Hindi words properly?

14. Which do you like better reading in Hindi or Writing in Hindi?

15. Which problems do you face in writing?

16. Which problems do you face more in writing?

Spelling

Sentence-Formation

Gender, singular /plural

17. Are you able to write correctly when the teacher dictates something to you?

18. Are you able to write correct answers from paragraph?

19. Do you complete your Hindi homework on time?

20. Do you practice Hindi writing at home?

QUESTIONS: LISTENING-UNDERSTANDING

21. Are you able to understand when teacher teach you?

22. When teacher dictate the words do you understand it?

23. Do you understand when teacher discuss the questions and answers of the lesson?

24. Can u repeat the discussing answer in your own words?

QUESTIONS: SPEAKING

25. Which one among the following mistake in Hindi do you make?

Wrong Pronunciation

Gender mistakes

Using Vernacular words

Wrong sentence formation

26. Can you fluently speak in Hindi on any topic?

27. Do you use Hindi dictionary to increase your Vocabulary?

28. Do you converse in Hindi with others?

SEMI-STRCTURED INTERVIEW: TEACHERS

1. What type of difficulties do you face when you teach Non-Hindi speaking students?

2. Introduction of Hindi language varies from state to state, what problems are faced by students who change school from one state to another in learning Hindi?

3. What type of mistakes is seen in students of Std. VIII?

4. How does the mother tongue affect learning of Hindi?

5. Do you think students neglect Hindi in preference of English?

6. Do you students keep their class work books complete or update?

7. Do the students submit the assignment on time? If not why?

8. What are the difficulties in pronouncing correctly Hindi word by the students?

9. Do you feel that the students find learning and understanding poem tougher than prose?

10. Do you think that the non-Hindi students are scored of learning Hindi grammar?

APPENDIX – II

(Pre-test and Post-test)

A DIAGNOSTIC TEST IN HINDI FOR STUDENT OF STD. VIII

(PRE-TEST)

Time: 1 Hour **Marks: 40**

Name:

प्रश्न १. नीचे दिए हुए परिच्छेद का वाचन करो और उसी पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(6 + 12 = 18)

सुनीता को अंतरिक्ष परी बनाने में कल्पना चावला ने ही प्रेरणा स्त्रोत का काम किया है। पिछले आठ वर्षों में अंतरिक्ष यात्रा पर जानेवाली भारतीय मूल की दूसरी महिला की सकुशल वापसी से लोगो ने राहत की साँस ली। अपनी वापसी के समय सुनीता ने कहा था कि नासा के अभियान में कल्पना के साथ काम करना बेहद सुखद अनुभव था। हम दोनों की रूचि काफी अलग थी लेकिन भारतीय होना हमें एक सूत्र में पिरोता था। दोनो को भारतीय संगीत से बेहद लगाव था। कल्पना से मुझे काफी कुछ सीखने को मिला।

जून, १९९८ में सुनीता को नासा के लिए चयनित किया गया। अगस्त,१९९८ में उन्होनें नासा में प्रशिक्षण प्रारंभ कर दिया। कड़े प्रशिक्षण के बाद सुनीता खुद अंतरिक्ष यात्रा के लिए तैयार हो गई, सुनीता बताती है कि अंतरिक्ष स्पेश स्टेशन में जिंदगी आसान नही है। खाने से लेकर नहाने तक यहाँ सब कुछ चलने-फिरने में दिक्कत होती है, हड्डीयाँ कमजोर हो जाती है। विमान तैयार होने में समय लगता है। सुनीता ने खुद को अंतरिक्ष प्रशिक्षण लेकर तैयार किया है। वैज्ञानिक तकनीकी भरे व्याख्यान, रूस में रहकर अंतरिक्ष कार्यक्रम तथा उनके यान आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की। उनके गोताखोरी के अनुभव होने वाले भारहिनता से स्पेसवॉक प्रशिक्षण में सहायता प्रदान की। अंतरिक्ष यात्रा के संदर्भ में बहुत-सी वैज्ञानिक जानकारियाँ और मुश्किलों के बारे में जाना। वे अंतरिक्ष के संभावित खतरों से खेलने के लिए पूर्णत: तैयार हो चुकी थी। सुनीता पूरी तैयार के लिए नौ दिन पानी के अन्दर भी रही। प्रशिक्षण खत्म होने में करीब आठ साल लगे।

1) सुनीता विलियम्स ने अपने अंतरिक्ष सफर का प्रेरणा स्त्रोत किसे बताया है ? **(1)**

उ. _____

APPENDIX – III

(Difficulties and Suggestions)

DIFFICULTIES

READING/UNDERSTANDING :

(१) हिन्दी के अक्षर और मात्राओं की समस्या छात्राओ में ज्यादा पाई गई है। जैसे- "श", "ष" को "स", कहते हैं। "ध" को "छ" कहते है "ज " और "झ" कहते हैं। उसी तरह से मात्राओं का ज्ञान भी अधूरा है। ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के बीच का अंतर नहीं समझते। एक जैसा ही सबकुछ पढते हैं।

उदाहरण : इ,ई का अंतर नहीं समझते, "र" के मात्रा के शब्द बोल नहीं पाते जैसे की-कार्यक्रम।

(२) कठिन शब्द, संयुक्त अक्षर और संयुक्त व्यंजन शब्दों का पठन करने में छात्रों को ज्यादा कठिनाई होती है।

उदाहरण : प्रेरणा, स्त्रोत, प्रशासन, प्रशिक्षण, अंतरिक्ष, ज्ञानी, यात्रा, स्वच्छता इस प्रकार से।

(३) वाचन करते समय स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण का अभाव

(४) वाचन करते समय आरोह-अवरोह, भाषा की गति, भावुकता का अभाव दिखाई देता है। विराम चिन्हों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

(५) "वाचन" पुनरावृत्ति का अभाव

(६) पढने और समझने में अंतर

2) सुनीता विलियम्स का कल्पना चावला के साथ कैसा अनुभव रहा ? संक्षिप्त में बताइए। (3)

उ.

3) अंतरिक्ष स्पेश स्टेशन में सुनीता विलियम्स को कौन-कौनसी कठिनाइयों का सामना करना पडा? (3)

उ.

4) सुनीता वे नासा प्रशिक्षण का कालावधी कितना रहा ? (1)

उ.

1/2

एक सूत्र में पिरोना - इस मुहावरे का अर्थ बताकर एक वाक्य में प्रयोग कीजिए। (1

5))

उ.

6) दिए हुए परिच्छेद में से किन्हीं पाँच विशेषण शब्दो को ढूँढकर लिखिए : (कोई भी पाँच) ($2^{1/2}$)

उ. _____

प्रश्न २.(अ) नीचे दिए हुए परिच्छेद को सुनकर अपने शब्दो में स्पष्ट रूप से समझाइए (5)

(ब) श्रुतलेखन (6)

_____

_____

_____

_____

_____

_____

प्रश्न ३. दिए गए विषय पर अपने विचार मौखिक रूप से स्पष्ट करें - (6)

विषय - (१) स्वतंत्रता दिवस । (२) समय का महत्व । (३) स्वच्छता ।

प्रश्न ४. निबंध लिखिए -(किसी एक विषय पर) (6)

विषय -

(१) दीवाली : दीवाली के आगमन की पूर्व तयारी, दीवाली का आगमन, दीवाली रोशनी का त्योहार, दीवाली का सांस्कृतिक महत्व, सबसे बड़ा और बच्चो का प्यारा त्योहार, होली मिलन का त्योहार ।

(२) अनुशासन का महत्व : अनुशासन सफलता की कुंजी, प्रकृति में अनुशासन एक उदाहरण, विद्यार्थी और अनुशासन, समाज और राष्ट्र में अनुशासन ।

(३) समाचार पत्र : समाचार पत्र प्रभावी संचार साधन, समाचार पत्र का कार्य जनमत तैयार करना, समाचार पत्र का महत्व ।

उ. _____

A DIAGNOSTIC TEST IN HINDI FOR STUDENT OF STD. VIII

(POST-TEST)

Time : 1 Hour **Marks : 40**

Name:-

प्रश्न १. नीचे दिए हुए परिच्छेद का वाचन करो और उसी पर आधारित कुछ प्रश्न निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर लिखिए -

(6+12=18)

लाल बहादुर शास्त्री का एक सामान्य परिवार में जन्म हुआ था, सामान्य परिवार में ही उनकी परवरिश हुई थी । और जब वे देश के प्रधानमंत्री जैसे महत्वपूर्ण पद पर पहुँचे तब भी वह सामान्य ही बने रहे । विनम्रता, सादगी और सरलता उनके व्यक्तित्व में एक विशिष्ट प्रकार का आकर्षण पैदा करते थे । इस दृष्टि से शास्त्रीजी का व्यक्तित्व बापू के अधिक करीब था और बापू से प्रभावित होकर ही सन् १९२१ में उन्होनें अपनी पढाई छोड़ी थी । शास्त्रीजी पर बापू का कुछ ऐसा प्रभाव रहा कि वह जीवनभर उन्हीं के आदर्शो पर चलते रहे तथा औरो को इसके लिए प्रेरित करते रहे ।

शास्त्रीजी ने हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम में तब प्रवेश किया था जब वे एक स्कूल में विद्यार्थी थे और उस समय उनकी उम्र १७ वर्ष की थी । गाँधीजी के आह्वान पर वे स्कूल छोड़कर बाहर आ गए थे । इसके बाद काशी विद्यापीठ में उन्होनें अपनी शिक्षा पूरी की। उनका मन हमेशा देश की आजादी और सामाजिक कार्यो की ओर लगा रहा । परिणाम यह हुआ कि सन् १९२६ में वे लोकसेवा मंडल में शामिल हो गए , जिसके वे जीवनभर सदस्य रहे । इसमें शामिल होने के बाद से शास्त्रीजी ने गाँधीजी के विचारों के अनुरूप अछूतोद्धार के काम में अपने आपको लगाया । यहाँ से शास्त्रीजी के जीवन का एक नया अध्याय प्रारंभ हो गया, सन् १९३० में जब ङ्कनमक कानून तोड़ो आंदोलनङ्क शुरू हुआ, तो शास्त्रीजी ने उसमें भाग लिया जिसके परिणामस्वरूप उन्हें जेल जाना पड़ा । यहाँ से शास्त्रीजी की जेल यात्रा की जो शुरूआत हुई तो वह सन् १९४२ के ङ्कभारत छोड़ो आंदोलनङ्क तक निरंतर चलती रही । इन १२ वर्षो के दौरान वे सात बार जेल गए । इसी से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि उनके अंदर देश की आज़ादी के लिए कितनी बड़ी ललक थी । दूसरी यात्रा उन्हें सन् १९३२ में किसान आंदोलन में भाग लेने के लिए करनी पड़ी । सन् १९४२ की उनकी जेल यात्रा ३ वर्ष की थी, जो सबसे लंबी यात्रा थी।

(1) लाल बहादुर शास्त्रीजी के व्यक्तित्व में सबसे अधिक करीब किसे बताया गया है ? (1)

उ. _____

(२) लाल बहादुर शास्त्रीजी के ऊपर गाँधीजी के आदर्शो का कैसा प्रभाव रहा ? संक्षिप्त में बताइए। (3)

उ. _____

_____

_____

(३) स्वतंत्रता आंदोलन में लाल बहादुर शास्त्रीजी को किस प्रकार जेल यात्रा करनी पडी ? वर्णन कीजिए ।

उ. _____ (3)

_____

_____

_____

_____

(४) शास्त्रीजी की सबसे लंबी जेलयात्रा १९४२ की रही, उसका कालावधी कितने वर्ष का था ? (1)

उ. _____ _____

(५) आह्वान करना इस मुहावरे का अर्थ बताकर एक वाक्य में प्रयोग कीजिए - $(1^{1/2})$

उ. आह्वान करना - _____

(६) दिए हुए परिच्छेद में से किन्हीं पाँच विशेषण शब्दों को ढूँढकर लिखिए - $(2^{1/2})$

उ. _____

प्रश्न २.(अ) परिच्छेद को सुनकर अपने शब्दो में स्पष्ट से समझाइए - _____

_____

(ब) श्रुत लेखन :

(6)

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

प्रश्न ३. दिए हुए विषय पर अपने विचार मौखिक रूप से स्पष्ट करें – (6)

विषय : (१) प्रजासत्ताक दिन (२) शिक्षा का महत्व (३) प्रदूषण

प्रश्न ४. निबंध लिखिए –(किसी एक विषय पर) (6)

विषय –

(१) होली : होली का आगमन, होली का ऐतिहासिक महत्व, होली का सांस्कृतिक महत्व, होली कैसे मनाएँ, होली मिलन का त्योहार ।

(२) परिश्रम का महत्व : श्रम से सफलता, श्रम से ही कार्य का महत्व, सफल व्यक्तियों के उदाहरण, अकर्मण्यता से असफलता, देश के विकास में महत्व ।

(३) इंटरनेट – एक अद्‌भूत क्रांति : विज्ञान का चमत्कार, अद्‌भूत क्रांति, विभिन्न जानकारी का स्त्रोत, मनोरंजन का साधन, वरदान भी अभिशाप भी।

उ. _____

_____

APPENDIX – III

(Difficulties and Suggestions)

DIFFICULTIES

READING/UNDERSTANDING :

(१) हिन्दी के अक्षर और मात्राओं की समस्या छात्राओ में ज्यादा पाई गई है। जैसे- "श", "ष" को "स", कहते हैं। "घ" को "छ" कहते है "ज " और "झ" कहते हैं। उसी तरह से मात्राओं का ज्ञान भी अधूरा है। ह्रस्व और दीर्घ स्वरों के बीच का अंतर नहीं समझते। एक जैसा ही सबकुछ पढते हैं।

उदाहरण : इ,ई का अंतर नहीं समझते, "र" के मात्रा के शब्द बोल नहीं पाते जैसे की-कार्यक्रम।

(२) कठिन शब्द, संयुक्त अक्षर और संयुक्त व्यंजन शब्दों का पठन करने में छात्रों को ज्यादा कठिनाई होती है ।

उदाहरण : प्रेरणा, स्त्रोत, प्रशासन, प्रशिक्षण, अंतरिक्ष, ज्ञानी, यात्रा, स्वच्छता इस प्रकार से ।

(३) वाचन करते समय स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण का अभाव

(४) वाचन करते समय आरोह-अवरोह, भाषा की गति, भावुकता का अभाव दिखाई देता है। विराम चिन्हों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

(५) "वाचन" पुनरावृत्ति का अभाव

(६) पढने और समझने में अंतर

WRITING:

(१) हिन्दी के मात्राओं की समस्या (ह्रस्व और दीर्घ स्वर के अंतर को समझने में कठिनाई)

(२) किसी पाठ या परिच्छेद के प्रश्नों के उत्तर लिखने में असमर्थ

(३) रचनात्मक कार्य (Creative Writing) में कठिनाईयाँ

(४) विरामचिह्नो का अभाव

(५) लेखन पुनरावृत्ति की समस्या

SPEAKING :

(१) शुद्ध हिन्दी न बोलना

(२) मातृभाषा तथा अंग्रेजी का प्रयोग

(३) व्याकरणिक समस्याएँ

(४) वक्तृत्व नहीं कर पाना

LISTENING/UNDERSTANDING :

(१) सुनकर लिखने की समस्या (श्रुतलेखन) : ट,ठ, ढ, ध,ध,ज,झ अक्षरो को समझने में कठिनाई

(२) सुनकर बोलना : मात्रा में ह्रस्व व दीर्घ की समस्या

(३) सुनकर समझने में कठिनाई

व्याकरणिक समस्या :

(१) व्याकरणिक विधा में अरूचि

(२) व्याकरण की मूल विधाओं को समझने में कठिनाई। जैसे कि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण

(३) एकवचन, अनेक वचन में कठिनाई

(४) मुहावरों को समझना और अपने शब्दो में वाक्य बनाने में कठिनाई ।

SUGGESTIONS

READING/UNDERSTANDING :

(१) हिन्दी की वर्णमाला (Alphabets) तथा मात्राओं की पुनरावृत्ती करवाना जरूरी है। 'स', 'ष', 'श', 'घ', 'छ' , ज, झ यह अक्षर पढाते समय आए तो अध्यापक उन शब्दों पर जोर दे, रोज के अभ्यास में बार-बार दोहराएँ । ताकि उच्चारण से उनके होनेवाले फ र्क को छात्र जाने ।

ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर अलग होते हैं। उन्हीं के अनुरूप मात्राएँ होती है। हर एक मात्रा अलग तरीके से बोली जाती है जैसे ओर-और, दीन-दिन बोलना भी अलग होता है तथा अर्थ भी अलग निकलता है। छोटी मात्रा को बोलने में कम समय लगता है तो बड़ी मात्रा को ज्यादा जैसे-रु ,रू । बार-बार ऐसे शब्द उन्हें समझाएँ, पढाएँ, दोहराएँ और पुनरावृत्ति करवाएँ। ''र'' की मात्रा के रूप - वर्ष, कार्य, क्रम (', ,‿) इनमें जो अंतर है वह समझाएँ ।

(२) संयुक्त व्यंजन, संयुक्ताक्षर तथा कठिन शब्द पठन करते समय आते हैं तब छात्र पढ नहीं पाता है तो उस शब्द का उच्चारण तब तक दोहराओ जब तक छात्र अच्छे से बोल न पाएँ और उतना सराव दो कि जब तक उसका उच्चारण स्पष्ट और सही न हो जाएँ।

संयुक्त व्यंजन = क् + ष् + क्ष = अंतरिक्ष, प्रशिक्षण रक्षा त् + र् + त्र = स्त्रोत, सूत्र

ज् + ञ = ज्ञ = ज्ञान श् + र् = श्र = श्रवण

संयुक्त अक्षर = व्य = व्याख्यान स्ट = स्टेशन

इस तरह संयुक्ताक्षर और संयुक्त व्यंजन अलग है, यह व्याकरण पुस्तिका का आधार लेकर छात्रा ज्यादा समझ पाएँगे। व्याकरण पुस्तिका पढने को छात्रों को उत्तेजित करें।

(३) छात्रों को वाचन करने से पूर्व ही सूचित करे कि आवाज स्पष्ट हो तथा शब्दों का उच्चारण शुद्ध हो। जो जैसा दिया हुआ वैसा ही शब्द पढे, मन से कोई भी शब्द जोड़ने की आवश्यकता नहीं , चाहे पढ़ने में देर लगे लेकिन सही और स्पष्ट रूप से पढे। अध्यापक इन सूचनाओं को दे ताकि उनके वाचन में स्पष्टता तथा शुद्धता आए।

(४) अध्यापक को वाचन कराते समय आरोह-अवरोह , भाषा की गति, भाषा की भावुकता, संवेदना तथा विराम चिन्हों पर ध्यान देना होगा। और छात्र भी उसी तरीके से पढ़े यह कोशिश करनी होगी। विराम चिन्ह, प्रश्न चिन्ह, उद्गार चिन्ह इनका ज्ञान छात्रो को अवगत कराना होगा। कहाँ रूकना है , कहाँ स्वर को बढाना है, तो कहाँ आवाज धीमी करनी इसके बारे में पठन समय अध्यापक को छात्राओं को सूचनाएँ देनी जरूरी है।

(५) छात्र ज्यादा से ज्यादा हिन्दी पुस्तक का वाचन नहीं करते इसलिए उनको पाठ्यपुस्तक भी सही तरीके से पढनी नहीं आती। अध्यापक उन्हें हिन्दी कहानी पुस्तिका पढने में प्रवृत्त करें। पुस्तकालय में से हिन्दी के रामायण, महाभारत ग्रंथ पढ़ने को प्रेरित करो, या घर पर माता-पिता से किसी तोहफ के बदले हिन्दी कहानी पुस्तक की माँग करे और अपने मित्रों को भी पढने दे। रोज कक्षा में हिन्दी का वाचन अनिवार्य करना चाहिए।

(६) छात्र जो पढ रहा है वह समझता है की नहीं यह अध्यापक जाँचे। क्योंकि बहुत सारे छात्र पढ तो लेते हैं परंतु समझ नहीं पाते ऐसे में अध्यापक यह ध्यान रखे।

WRITING :

(१) हिन्दी लिखते समय छात्रों को जान-बूझकर मात्राओं पर ध्यान देना होगा। हर एक मात्रा अलग होती है और प्रयोग करने के बाद उसका अर्थ भी बदल जाता है।

उदाहरण : ओर-और, की-कि, में-मैं, है-हैं। कुछ शब्दो में "र" की मात्रा लगानी होती है। "निरबल" ज्यादातर बच्चे ऐसा लिखते हैं तो उन्हें " " का ज्ञान नहीं होता सही शब्द "निर्बल"। ऐसे कई शब्द है जहाँ मात्राएँ गलत लगाते हैं और वाक्य का पूरा अर्थ ही बदल जाता है। दिन-दीन इस प्रकार।

(२) किसी पाठ के या परिच्छेद को पढकर प्रश्नों के उत्तर लिखते समय छात्र वैसे का वैसा कॉपी करके उत्तर लिखते हैं, इसलिए उन्हें अपने शब्दो में उत्तर लिखने का सराव दे, छोटे-छोटे वाक्य बनाने की कोशिश में लगाएँ, पाठ में आए नए शब्दों का अपनी भाषा में उपयोग करे क्योंकि कठिन शब्द, नए शब्द, संयुक्ताक्षर व सयुंक्त व्यंजन लिखने में ही उनका परेशानी होती है। प्रश्नों के उत्तर की कक्षा में चर्चा करे तो वह अपने शब्दो में उत्तर लिख सकते हैं।

(३) शब्दों का ज्ञान नहीं होता (Vocabulary), शब्द न होने के कारण वाक्य की रचना नहीं कर पाते (Sentence Formation)। इसलिए उनका शब्द भंडार बढाना जरूरी है। अगर अध्यापक फलक पर "अर्थ सहित एक नया शब्द" रोज लिखे और बच्चों को स्पष्ट करे तो दिन-भर क्लास खत्म होने तक उनके सामने वह शब्द रहेगा और उनको याद हो जाएगा। दूसरे दिन दूसरा शब्द लिखे और स्पष्ट करें, उन्हें "हिन्दी शब्दकोश" का उपयोग करने की भी सलाह दे। क्योंकि, निबंध,पत्र-लेखन, कहानी लेखन, रिपोर्ट बनाना इसके लिए शब्दों का ज्ञान होना बहुत जरूरी है।

परिच्छेद (Comprehension) हफ्ते में एक बार तो करवाएँ, कभी घर पर गृहकार्य के लिए दे। निबंध के लिए अलग-अलग पुस्तकें पढना जरूरी है। अध्यापक कोई भी एक विषय देकर घर से उस पर निबंध या कहानी लिखने को दे, छोटे-छोटे वाक्य बनाने को कहे , जो कहानी को आगे ले जाए ।

रचनात्मक कार्य कराते समय छात्रों को समझाना है कि इसमें केवल आपको दिया गया शीर्षक या कहानी ही नहीं देखा जाता है तो उसके साथ-साथ उसका परिचय, शुरूआत कैसे की है, क्रमबद्धता, आवश्यकता और उपर्युक्त नए शब्दों का प्रयोग किया है या नहीं, आपका हस्ताक्षर कैसा है, व्याकरण की गलतियाँ, परिच्छेद बनाए हैं या नहीं इन बातों का भी ध्यान मूल्यांकन करते समय देखा जाता है। इन बारीकियों के बारे में उन्हें मालूम होना चाहिए । जैसे की वह अपने रचनात्मक कार्य में सुधार लाए।

(४) अध्यापक छात्रो को विराम चिह्नो का ज्ञान कराए । लिखते समय वह बहुत जरूरी है ।

(५) कुछ छात्र समझते कुछ और है, और लिखते कुछ अलग ही है, ऐसे समय अध्यापक उन्हें समझ-समझकर आर सही मात्रा तथा उचित शब्दों को प्रयोग करने का मार्गदर्शन करें ।

SPEAKING :

(१) बोलते समय छात्रा शुद्ध हिन्दी नहीं बोल पाते, बोल तो लेते हैं, पर उनकी हिन्दी भाषा शुद्ध नहीं होती। उनका उच्चारण (Pronounation) सही कराएँ ।

(२) हिन्दी बोलते समय उनकी भाषा में उनकी अपनी मातृभाषा के शब्द आ जाते हैं। (ज्यादातर गुजराती बोलने वाले) छात्राओं में ये पाया गया है और कभी-कभी हिन्दी बोलते हैं और समय पर पर "हिन्दी शब्द" न सूझने पर वह अंग्रेजी शब्द का प्रयोग कर लेते हैं। उस समय उन्हें स्पष्ट करें कि हम हमारे विद्यालय में एक साथ ३ भाषा सीख रहे हैं , राष्ट्रभाषा, मातृभाषा तथा आंतरराष्ट्रीय भाषा। तीनों भाषाएँ अलग हैं और वो सारी उन्हें आनी जरूरी है परंतु उनका अपना अलग-अलग स्थान है, उनको एक साथ न बोले। हर एक भाषा स्वतंत्र होने के कारण जिस समय जो भाषा बोल रहे हैं उसी को कायम रखें। उसी के शब्दों का प्रयोग करें दूसरी भाषा को बीच में न लाएँ, भले ही शब्दों को सोचने में, याद करने में देर लगे, परंतु बाद में वह भाषा आपकी स्पष्ट हो जाएगी और बाद में अलग-अलग भाषाओं पर वह अपना प्रभुत्व भी पा लेंगे। छात्र बोलते समय अध्यापक ध्यान रखकर तुरंत उनके गलत भाषा के "शब्द " मिले तो उनको पकड लें और सही भाषा का प्रयोग करने को सिखाएँ।

(३) बोलते समय स्त्रीलिंग-पुल्लिंग के शब्द छात्र गलत बोलते हैं । एक वचन, अनेक वचन में गलतियाँ होती हैं। इस प्रकार का भाषण करते समय अध्यापक छात्रों को टोके और किस तरह से बोलना चाहिए यह समझाएँ।

(४) छात्रों को हिन्दी का उपयोग करके कोई विषय या शीर्षक देकर उस विषय पर बोलने के लिए कहे तो वह तुरंत बोल नहीं पाते हैं । इसलिए कक्षा में इसके ऊपर सराव होना चाहिए । कोई खेल के स्वरूप में भी वो कर सकते हैं। अपने मित्र को कोई भी एक विषय देकर उसको पाँच-सात वाक्य बोलने को प्रेरित करे फिर दूसरा पहलेवाले को नया शीर्षक या विषय देकर बोलने को कहे । जिसके कारण एक-दूसरे के विचार, नए शब्द, भाषा की रचना सीख पाएँगे।

LISTENING / UNDERSTANDING:

(१) कक्षा में श्रुतलेखन तथा प्रश्नों के उत्तर सुनकर लिखने को कहा जाता है तब छात्र कर नहीं पाते उसका कारण है- एकाग्रता न होना, ग्रहण करके लिखने की क्षमता न होना, मात्राओं की नासमझ, शब्दों का ज्ञान न होना । वे लिखना तो चाहते हैं परंतु उस शब्द को कैसे लिखते हैं, वहीं भूल जाते हैं, इसलिए उन्हें सुनकर लिखने का सराव कक्षा में बहुत बार करवाएँ । पाठ खत्म होने के बाद नए शब्द तीन या पाँच बार लिखने को अनिवार्य करें । श्रुतलेखन बार-बार होने से वो लिखते समय सोचते हैं, शब्दो को याद करते हैं और ना आए तो देखकर परंतु "समझकर" लिखे कि इसे क्या कहते हैं और कैसे लिखते हैं।

कठिन शब्द, नए शब्द, संयुक्ताक्षर ये तो बिल्कुल ही सही नहीं लिख पाते- कर्म-करम, उन्नति-उनति । मात्राओं में बड़ी गलतियाँ करते हैं- सराव के कारण गलतियाँ कम होगी इसलिए छात्रों को शब्दो को समझकर लिखने की आदत डालें ।

(२) छात्रो को किसी विषय के बारे में जानकारी दी जाए या कोई कहानी सुनाई जाए बाद में उसी को अपने शब्दों में कहने को कहें तो छात्राएँ कर नहीं पाते, अपने शब्दों में बोल नहीं पाते । इसकी भी पुनरावृति छात्रों को देनी चाहिए। सुनकर आकलन करना आर अपने शब्दों में उसे प्रकट करना यह भाषा कौशल्य का ही एक प्रकार है । अध्यापक एक विषय को स्पष्ट कर दे और बाद में उसीको छात्रों को बोलने को कहे तो वह सोचने लगेंगे कि क्या कहा था ?, कैसे उच्चारण किया था ? यह सोचने लगेंगे और नहीं आया तो दूसरी बार वह ध्यान से सुनेंगे इससे धीरे-धीरे

व्याकरण

- **व्याकरणिक समस्याएँ :**

बहुत सारे छात्र हिन्दी व्याकरण के बारे में ज्यादा रूचि नहीं दिखाते। कुछ ही छात्रों को हिन्दी व्याकरण म रूचि होती है। अगर हम उन्हें संज्ञा क्या है ? सर्वनाम किसे कहते हैं ? क्रिया क्या होती है? विशेषण कैसे पहचानते हैं ? यह व्याकरण की मूल संकल्पनाएँ तथा इन विकारी शब्दों के बारे में अच्छे से जानकारी दे दे, उनकी पहचान करा दे तो अगले कक्षा की नई व्याकरणिक संकल्पनाएँ जैसे कि अविकारी शब्द, वर्ण विचार, शब्द-रचना उन्हें पढने में और समझने में आसान हो जाता है। स्त्रीलिंग-पुल्लिंग का एक पूरा चार्ट क्लास में लगा दे जिसे खाली समय पर पढाया जाए। साथ-साथ एकवचन को बहुवचन में परिवर्तित होते समय मात्राओं में कैसे बदलाव हाता है यह खास करके ध्यान में लाया जाए। मुहावरो और उक्तियों के अर्थ समझने में उनको प्रेरित करे और अपने शब्दो में, वाक्यो में प्रयोग करने को बोले, उनको अपनी नीजी जिंदगी से जोड़े तो बच्चे जल्दी कर पाएँगे। उन्हें वाक्य बनाने के नए-नए तरीके सिखाएँ जैसे- अपने खुद पर, दोस्तो पर, देश पर, नेताओं पर, वस्तुओ पर या किसी के भी नाम पर हम कोई भी सीधा-सरल वाक्य बना सकते हैं। बस उसे सही तरीके से प्रयोग करें।

उदाहरण : बड़े भाई के घर में प्रवेश करते ही मेरे दोस्त घर से नौ-दो ग्यारह हो गए।

इससे उनकी सोच तथा कल्पनाविस्तार बढने में मदद होगी।